सुबह की प्रार्थना

– डॉ. नरेश अग्रवाल

सुबह की प्रार्थना

– डॉ. नरेश अग्रवाल

भगवान अग्रसेन जी को समर्पित
प्रार्थनाओं का विश्व का पहला संग्रह

सुबह की प्रार्थना

– डॉ. नरेश अग्रवाल

© डॉ. नरेश अग्रवाल

प्रकाशक –
'मरुधर के स्वर' पत्रिका
मरुधर साहित्य ट्रस्ट
मधुकुंज, क्यू रोड, बिष्टुपुर,
जमशेदपुर–831001
मो.: 9334825981, 7979843694
ई.मेल: sidha99@gmail.com

प्रधान सम्पादक–डॉ. नरेश अग्रवाल
सम्पादक–महेश अग्रवाल

प्रथम संस्करण: सन्, 2018

मूल्य: 100/– रुपये
ई बुक कलर: निशुल्क वितरण

लेखक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' -इंडिया टुडे

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन, सूक्तियों पर 4 पुस्तकों तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर के स्वर' रंगीन राजस्थानी-हिन्दी पत्रिका का सम्पादन पिछले सात वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 से 2016 तक में सूक्तियों पर 'सूक्ति-सागर भाग 1,2,3 और 4' नाम से चार पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 3500 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी तथा इन पर स्लाईड और वीडियो भी बनें।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, 'अक्षर-कुंभ' सम्मान, 'सुरभि साहित्य' सम्मान, 'संकल्प साहित्य शिरोमणि सम्मान' आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रूप से पारंगत तथा हजारों दुर्लभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।

लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहित हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीरों का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध है। यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत देशों की यात्रा की।

सम्पर्क-
रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर-831001
दूरभाष-9334825981, 7979843694
ई. मेल-sidha99@gmail.com

अपनी बात

महाराज अग्रसेन हम सभी अग्रवंशियों के आदि पुरुष हैं यह बताने की जरूरत नहीं। यह बताने की भी जरूरत नहीं कि इस विशाल वंश वृक्ष के संस्थापक, हमारे प्रपितामह महाराज अग्रसेन के जीवन और जगत, परिवार और समाज के संबंध में क्या आदर्श थे। हम सभी अग्रवंशी जानते हैं इसे और मानते भी हैं। लेकिन यह तो हमें ईमानदारी पूर्वक मानना ही पड़ेगा कि समय के साथ उनके महान आदर्शों से उनके हम वंशजों की दूरी बढ़ी है। समय और तथाकथित आधुनिकता की अंधी दौड़ हमें हमारे कुलादर्शों से दूर करती जा रही है। विशेष रूप से हमारी नयी पीढ़ी आधुनिक शिक्षा और तथाकथित आधुनिक लोगों की नकल के कारण वर्तमान पीढ़ी पुरानी बातों को सही संदर्भों में नहीं ग्रहण नहीं कर पा रही है। सुबह की प्रार्थना पाठकों को दुबारा अपनी जड़ों से जुड़ने और उसके महान आदर्शों को सही संदर्भ में समझने, आत्मसात करने के लिए समुचित भावभूमि से जोड़ने के लिए ही लिखी गयी है। इस पुस्तक में संग्रहित लगभग सभी प्रार्थनाएं प्रपितामह महाराज अग्रसेन के उन आदर्शों को याद करते हुए उन्हें अंगीकार करने के लिए स्वयं को तैयार करने की पीठिका तैयार करती हैं, जिनसे प्रेरित अग्र परिवारों ने अब तक समृद्धि एवं कीर्ति के उत्तुंग शिखर पर पहुंचने में सफलता पायी है, सनातन हिन्दुत्व की भावना को और समृद्ध किया है। पुस्तक की प्रार्थनाएं भगवान अग्रसेन के प्रति हमारे समर्पण और उनके आदर्शों के प्रति हमारी निष्ठा को बढ़ाने में किंचित भी सहायक हो सके तो मैं अपना श्रम सार्थक मानूंगा।

इति

–नरेश अग्रवाल
जमशेदपुर

डॉ. चम्पालाल गुप्त

प्रस्तावना

'सुबह की प्रार्थना' नरेश अग्रवाल की एकान्त समर्पण-भाव से युक्त प्रार्थनाओं का संग्रह है। नरेश अग्रवाल साहित्य जगत के लिए नया नाम नहीं, जहां उनकी आधुनिक चेतना वाली कविताओं के अनेक महत्त्वपूर्ण संग्रह पाठकों का समर्थन पा चुके हैं। उनकी अनेक कविताएँ तो समय की सीमाओं का उल्लंघन कर शाश्वत मूल्य बोध को लेकर चलती हैं, जिनका अपना साहित्यिक महत्व है। वे कविताएं अपने रचयिता के आपने आस-पास की चीजों के सचेत एवं सहृदय अवलोकन एवं उन पर सुदीर्घ मनन को प्रदर्शित करती हैं। उन कविताओं से स्पष्ट होता है कि उनका रचयिता दैनंदिन जीवन की परिघटनाओं को भी कितनी सूक्ष्मता और आत्मीयता के साथ देखता और गुनता है।

सुबह की प्रार्थना में संग्रहित प्रार्थनाओं में कवि का वह कौशल तो वर्तमान है ही, साथ ही कवि की एक सुनिश्चित एवं सुदीर्घ चिंतन सरणि की ओर भी इंगित करती है। हाँ, उनका फलक जरूर नितान्त अलग है। कवि की ये रचनाएं कविता के आवश्यक तत्व 'सहितता' का अनुसंधान करती चलती हैं। अग्र वंश के आदि पुरुष भगवान अग्रसेन को संबोधित ये एकांत समर्पण वाली प्रार्थनाएं अपने आप में व्यक्तिगत याचनाएं होते हुए भी पूरे अग्र समाज से जुड़ती हैं। कवि अपने आराध्य से दुनिया की तमाम नेमतें पाने की प्रार्थना करता है, लेकिन अपने लिए, अपना घर या खजाना भरने के लिए नहीं, बल्कि पूरे अग्र महापरिवार को उन महान आदर्शों एवं सद्गुणों से जोड़ने के लिए, जिनसे वह दूर होता जा रहा है। अग्रवाल समाज भगवान अग्रसेन की न सिर्फ पूजा करता है, अपितु उनके जन हितैषी आदर्शों पर अडिग रहने का संकल्प भी लेता है। लेकिन आधुनिकता की अंधी दौड़ और अपने लिए अधिक से अधिक संग्रह की बढ़ती प्रवृत्ति ने अग्रवाल समाज को भी अपने आदर्शों से कहीं न कहीं दूर करना शुरू किया है, ऐसा इन प्रार्थनाओं के रचयिता की धारणा है और इसे वह पूरे अग्र समाज के लिए हानिकारक और उसे अग्र समाज के मूल आदर्शों से दूर

करने वाला मानता है। नरेश अग्रवाल ही क्यों, अग्र परिवार का कोई भी सदस्य अपनी जड़ों, अपने मूल आदर्शों से कभी दूर होना नहीं चाहता। महाराज अग्रसेन से लेकर आज तक की सुदीर्घ परंपरा में उनके वंशज आजीविका के लिए देश के ही नहीं, विश्व के भी चाहे किसी दूसरे कोने में जाकर क्यों न बसे हों, अपने आदर्शों से कभी समझौता नहीं किया है। पारस्परिक प्रेम, सामाजिक सद्भावना और समस्त प्राणियों के साथ सद्भाव शुरू से ही इस समाज की प्रेरणा रहे हैं। महाराज अग्रसेन ने अपने परिवार को इन सद्गुणों से कभी दूर न होने का ही पाठ पढ़ाया है। लेकिन आधुनिकता के प्रति ललक के कारण कतिपय अग्र वंशियों में भी इन आदर्शों से दूरी बनती दिखती है, जो स्थिति कवि श्री अग्रवाल को विचलित करती है। इसीलिए वे आरंभ में ही अपने कुल पुरुष से प्रार्थना करते हैं –

सभी का दिन शुभ हो
सभी पर मां लक्ष्मी की कृपा
सभी के हाथों में प्यारे कबूतरों के लिए गेहूं
गौ माता के लिए रोटी
पर्यावरण के प्रति सजगता
गरीबों के लिए भोजन
समाज सेवा के लिए भामाशाह जैसे हाथ
परिवार के लिए प्रेम
बड़ों के लिए आदर
मुख में स्वरों की मधुरता
रिश्तों में नजदीकी और आंखों के आगे
भगवान अग्रसेन जी की मुखाकृति।
ऐसी ही प्रार्थना से
शुरूआत हो सभी के दिन की।

वे प्रार्थना करते हैं

सोचता हूं आज कुछ भी नहीं बनना
लेकिन यात्री जरूर बनूंगा
शुरू करूंगा यात्रा तुम तक पहुंचने की ...

यह उन तक पहुंचने की प्रार्थना वास्तव में उनके उन उच्च जीवनादर्शों तक पहुंचने की यात्रा की ही कामना है, जिन्होंने महाराज अग्रसेन को वह नैतिक ऊंचाई प्रदान की, जिसकी बदौलत वे एक रुपये और एक ईंट की बहुचर्चित-बहुप्रशंसित समाज हित की अवधारणा कर पाये। अर्थोपार्जन में अग्रवाल समाज आज अग्रणी है, तो इसके पीछे महाराज अग्रसेन की व्यापार कुशलता तो है ही, लेकिन अपने अर्जित धन के व्यय का विधान भी उनका ही बनाया हुआ है, जिसमें प्राणि मात्र की चिंता की गयी है। हालांकि कवि चिंतित है महापरिवार के लोगों में आपसी फूट के कारण आ रहे बिखराव और उससे उत्पन्न होनेवाली त्रासदियों से। इसीलिए वे कातर प्रार्थना करते हैं -

इतना भी नहीं जानते हम
ईंट, ईंट के साथ जब रहती
बन जाते हैं बड़े-बड़े महल
रुपया, रुपया के साथ रहकर
कहलाता है अपार धन

कृपा करो हम पर
बनो शिक्षक पुनः एक बार
फिर से अवतरित हों धरती पर
जैसे पड़े थे तुम्हारे चरण
कभी धरती पर अमृत समान

कवि आश्वस्त है कि एकमात्र महाराज अग्रसेन की स्थापनाएं एवं अवधारणाएं हीं अग्र समाज की सारी समस्याओं का समाधान हैं और उन्हीं के बल पर यह समाज आगे भी अनाहत प्रगति पथ पर बढ़ता विकसित और पल्लवित-पुष्पित हो सकेगा। कवि का यह अभंग विश्वास उसे आश्वस्त करता है कि महाराज अग्रसेन का मार्ग ही पूरे अग्रवाल वंश की सुख-समृद्धि और यश कीर्ति पथ का पाथेय बन सकता है। इस दृष्टि से यह पुस्तक अग्रवाल महा परिवार के हर सदस्य के लिए तो संग्रहणीय है ही, लोभ-लालच और आधुनिकता के पीछे

बगटूट होकर भागते मनुष्य मात्र के लिए अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करने का महामंत्र भी बन सकता है।

आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी है कि नरेश जी की यह पुस्तक इसी संदर्भ में ली जायेगी और इसी अर्थ में इसे स्वीकार भी किया जायेगा। शायद कवि की इस एकांतिक प्रार्थना-भावना का यही सही मूल्यांकन भी होगा।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. चम्पालाल गुप्त
श्री गंगानगर
पूर्व सम्पादक, अग्रोहाधाम पत्रिका, अग्रोहा
महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

❖❖❖

भगवान अग्रसेन जी

सुबह की प्रार्थना 1

सभी का दिन शुभ हो
सभी पर मां लक्ष्मी की कृपा
सभी के हाथों में प्यारे कबूतरों के लिए गेहूं
गौ माता के लिए रोटी
पर्यावरण के प्रति सजगता
गरीबों के लिए भोजन
समाज सेवा के लिए भामाशाह जैसे हाथ
परिवार के लिए प्रेम
बड़ों के लिए आदर
मुख में स्वरों की मधुरता
रिश्तों में नजदीकी और आंखों के आगे
भगवान अग्रसेन जी की मुखाकृति।
ऐसी ही प्रार्थना से
शुरूआत हो सभी के दिन की।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 2

मुझ पर बस कृपा करो उतनी
जितनी से एक तिनका भी
पार कर जाता है सागर
करो उतना ही छोटा सा ही अभिनंदन
जितना होता है
एक गरीब का अमीर के द्वार पर
अपनाओ मुझे उतना ही
जैसे कोई अपनाता किसी तुच्छ को
भर दो मुझ में रंग रत्ती भर
ताकि नहीं लगूँ मैं रंगहीन
चाहे दो मुझको सब कुछ थोड़ा-थोड़ा
लेकिन प्रसाद संतुष्टि का असीम
जिसे न्योछावर करता रहूं
मैं सब पर हर दिन

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 3

हम कितना भी तेज दौड़ें थकते नहीं हैं
क्योंकि तुम्हारी ऊर्जा सदैव हमारे साथ।

धूप हमारा कुछ बिगाड़ नहीं पाती
पसीना, हवा स्वयं बहा ले जाती है।

हाथ पाँव सभी मशीन हैं
लेकिन मस्तिष्क कोमल फूल की तरह।

हमारे पास ज्वाला भी है और अंगार भी
लेकिन प्यार का अंश बच्चों की पुचकार सा।

हम सदैव समर्पित हैं तुमको
जैसे हथौड़ा लोहार का।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 4

तुम शायद वृद्धों के प्यारे हो
इसलिए दिखते हो हर चित्र में
बूढ़े पितामह-से
दाढ़ी सफेद और वही मुकुट और सिंहासन
तुम लड़ाई नहीं सिखाते
इसलिए नहीं जरूरत होने की युवा
ना ही करते हो हिंसा
इसलिए तीर धनुष भी जरूरी नहीं
तुम्हारी जरूरतें हैं केवल तीन
वृद्धों का सम्मान
कमजोरों को सहारा
और जीव-जंतुओं को संरक्षण
जो करता है इन नियमों का पालन
वही कहलाता है अग्र सेवक

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 5

मेरी कलम जब भी चले
हो उसमें ऊर्जा लहरों की
नतमस्तक हो इसका शीश हमेशा
तुम जगत् रचयिता पर
इसको मिले प्रकाश
जहां से मिलता
सूर्य और तारों को
यह ले सांस
तुम्हारी धड़कन से
इसके पत्ते
हिलें तुम्हारी ही जड़ों से
भाव उभर कर आएं
इसमें सभी दुखियों के
रोते बच्चों और बूढ़ों के
बंद कभी ना हो
इसका चलना, बढ़ना
ऐसी कृपा तुम्हारी
मुझ पर निरंतर हो

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 6

बांट रहे हैं बच्चों को
अग्र सेवक छाता और टोपी
बांट रहे हैं थोड़ी सी छाया
तुम्हारे अमर सिद्धांतों की

ये बच्चे तो कच्ची मिट्टी
बोये हैं जो बीज आज अग्र बंधुओं ने
कल बन जाएंगे अग्र ज्योति

चाहे यह काम क्यों न हो रत्तीभर का
संतुष्टि है इसमें हजार की
पग-पग पर झलक है इसमें
अग्रसेन के प्यार की

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 7

जितनी गहरी नींद हो हमारी
उससे अधिक दो होश जागने पर
एक-एक पन्ना हमारे मन का जागृत रहे
किसी बहुमूल्य को अंकित करने को
बुद्धि दो हमें इतनी
अपनी अच्छी दशा बनी रहे
लेकिन दुर्दशा ना करे कभी दूसरों की
हम शब्द उतने ही बोलें
जिससे सत्य हमेशा झलके
व्यवहार कुशल हों जरूर
लेकिन धूर्त नहीं कहीं से भी
वीरों की तरह साहसी हों
लेकिन हिंसा से कोसों दूर
मिले जो भी प्रसाद तुम्हारा
बांट दें उसे सभी को
हृदय की विशालता इतनी हो

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 8

तुम्हारे साथ की गयी यात्रा
कितनी सुखद होती है !
जहां जी चाहे वहां चले चलो
जो देखना चाहे वो देख लो
जैसे आकाश-धरती-पाताल को
एक साथ जोड़ दिया हो तुमने
सभी के लिए मेरा खुला स्पर्श
कहीं कोई रोक-टोक नहीं
हां फिर क्यों रुक जाते हैं मेरे पांव
एक कमजोर अग्र को देखकर
सोचता हूं भटक गया हूं मार्ग!
इन्हीं के साथ चलना था मुझे
तुम्हारा हाथ छोड़ कर

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 9

चिंतित ना हों अग्रो!
सभी की नींव पर स्थित हैं पितामह
मुश्किल रूपी ईंटों का भार झेलते हुए
यह वैसी ही निष्ठा है
जो एक पिता की बच्चों के लिए होती है
जो जड़ों की पत्तों पर होती है
इस पर शक मत करना
ना ही चिंता पितामह के कष्टों की
सदियों से पितामह असंख्य घाव झेल रहे
हर दिन घाव पर घाव बढ़ रहे
दर्द फिर भी अपना सह रहे
लेकिन रो उठते हैं उस दिन
जब दिखाई पड़ता है कोई अग्र
मुश्किल में फंसा उनके राज्य में
और दिखते नहीं कोई हाथ
एक ईंट और एक रुपया लिए हुए

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 10

मुझे अच्छी तरह से जांचो
जी भर कर जांचो प्रभु
क्या पता मैं सचमुच
तुम्हारे काबिल नहीं हूं
तुम देख लो खुली आंखों से
जो दीये जलाए हैं तुमने
ढेर सारे अपने सिद्धांतों के
क्या मैं उनमें अर्पण करता हूं
तेल और घी या नहीं
या कहीं बुझा तो नहीं दिया है
उन्हें अपनी लोभी हवाओं से
यह भी देख लो
निस्वार्थ है मेरी सेवा या नहीं
या कहीं थोड़ा सा देकर
अधिक तो नहीं वसूलता हूं मैं
देख लो मेरे पूरे चरित्र को
कहीं मेरी पंखुड़ी वैसी तो नहीं है
जो झड़ जाती है बेईमानों के झोंकों से
देख लो मुझे न्याय के तराजू पर रखकर
कहीं यह केवल अन्याय का बोझा तो नहीं
पहले मेरे हर रूप को जांच लो
जब तक यह शुद्ध और निश्चल ना हो
मेरी प्रार्थना ना सुनना
ना ही पास बैठने देना प्रभु

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 11

तू वैसा महान् राजा है
जो अत्याचार की छोटी सी छाया भी
बर्दाश्त नहीं कर पाता अपने राज्य में
किसी को सताए जाने का
दर्द महसूस करता है अपनी देह में
प्रजा के नुकसान को
समझता है अपने खजाने का नुकसान
अभावग्रस्त के आंसुओं को
सोख लेता है अपनी आंखों में
तू रक्षा की असंख्य दीवारें
निर्मित करता है, वैसे ही
जैसे कड़ी धूप में पेड़ अपनी छांव
तू सोता नहीं है, चिंतित रहता है
हर किसी की चैन भरी नींद के लिए
सुरक्षा, सेवा और सहयोग से भरा
इस तरह का कोई राज्य
केवल तुम्हारा ही हो सकता है

❖❖❖

भगवान अग्रसेन जी

सुबह की प्रार्थना 12

सभी चैन से जीते हैं तुम्हारे राज्य में
जिसकी जितनी क्षमता उतनी खुशी से
कीड़ा भी रेंगता उतनी ही शान से
जितने गर्व से चलते हाथी और शेर
घास भी पनपती उतनी हरी-भरी
जितने पीपल और वट वृक्ष
यहां कोई ऐसा हथियार नहीं उपलब्ध
जिसकी धार हो विध्वंसक
सारी दुष्टता सोई हो जहां चिरनिद्रा में
वहीं बसा है राज्य अग्रसेन का

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 13

तू सभी के लिए अलग-अलग तरह के गीत गाता है
जो जैसा समझता है उसी की भाषा में बोलता है
इस तरह से तू सभी को जगा लेता है
कोई सोया नहीं रहता तेरे राज्य में
एक हाथ से तू अमृत बांटता है
दूसरे से लोगों के कष्ट समेटता है

तू जानता है कि संसार कभी रुकता नहीं
वह प्रकाश से भी अधिक त्वरा से आगे बढ़ता है
इसलिए कमजोरों का तू सारथी बन जाता है और उनके रथ खींचता है
जब तक लोग तेरा उपकार समझें
तब तक दूसरा उपकार चढ़ा देता है उनके सिर पर
तुम्हारा यह सिलसिला अनवरत है
चिर स्थाई है अनन्त काल तक
लाभान्वित है इससे आने वाली सभी अग्र पीढ़ी

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 14

मुझे चाहिए बहुत सारी रोशनी
इतनी अधिक कि सारे ब्रह्मांड को देख सकूं
उतना बड़ा ही घर चाहिए
जिसमें रख सकूं मन की अनंत इच्छाओं को
उतना बड़ा ही जादुई विमान चाहिए
कर सकूं सैर जिससे
धरती, पाताल और आकाश की
इतने लंबे हाथ चाहिएं कि पहुंचा सकूं
सहायता हर अभावग्रस्त के पास
नाक ऐसी चाहिए सूंघ सके जो
सारे पर्यावरण की खुशबू एक साथ
प्यार इतना ढेर चाहिए
कि लुटा सकूं जिसे सारे जीव जंतुओं पर
ढाल ऐसी चाहिए
जो रोक ले वार दुष्टों का
मुझे अमरता भी चाहिए तुम्हारी जैसी
ताकि कर सकूं प्रचार
जन्म-जन्मांतर तक तुम्हारे सिद्धांतों का

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 15

अभी मेरे और तुम्हारे बीच
आंखें और तस्वीर जितनी दूरी है
और जब उलझा रहता हूं
दुनिया के सारे कार्यकलापों में
यह दूरी बढ़ कर
धरती से आसमान जितनी हो जाती है
कभी-कभी मैं जब
बिल्कुल तुम्हारे पास होता हूं
यह सिमटकर खुशबू और फूल जितनी हो जाती है
फिर इस सुखद एहसास को
बयान करना संभव नहीं होता है
किसी कलम या जुबान से
केवल इसे व्यक्त कर पाता हूं
मैं अपनी प्रार्थना में ही

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 16

जीवन के हैं असंख्य छोर
कहां से प्रवेश करूं
कि पा जाऊं तुम्हें।

थक चुका हूं इस धरती से
जहां है न्याय हर जगह पराजित
अन्याय बना हुआ राजा
विष सभी अपना बांट रहे
अमृत छुपा दिया गया।

प्रत्येक के सुखी जीवन में
कोशिश करती है ईर्ष्या
घुसपैठ जमाने की
भाई-भाई में विवाद है
और बैरी से अपनत्व।

बंद हैं आंखें ज्ञानियों की
फल-फूल रहें हैं स्वार्थी
प्रेम की सीढ़ियां कहीं नहीं
घृणा से पट चुकी
सारे सम्बंधों की गहराई।

तुम तो सर्वज्ञ हो
अभी भी समय है
बचा लो हम सबों को
बना दो हमारे राज्य को भी
समृद्ध और सुशासित
जैसा था पहले कभी अग्रोहा।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 17

पितामह ने सिर्फ एक अश्व की बलि नहीं रोकी थी
छुड़ाया था असंख्य जीव-जंतुओं को
जो बारी-बारी से जाने वाले थे
ग्रसित होकर काल के मुंह में
उन्होंने रोका था उन लोभी जिह्वाओं को
जो पिशाच बन गयी थी
भूख मिटती थी जिनकी मांस और खून से
उन्होंने रोका था भ्रष्ट हो चुकी जाति को
रोका था छुरी, चाकू, खंजर और कटारों को
जो पागल कुत्तों की तरह
आड़े-तिरछे दौड़ते हुए
धंस जाते थे खरगोश जैसे मुलायम तन पर
उन्होंने सभी के आंसू पोंछे
उल्टी कर दी जीभ हत्यारों की
वे सचमुच मनुष्य नहीं अवतारी थे
खेलते थे जिनके साथ
पशु, पक्षी, हिरण, गाय आदि
परिवार के सदस्य बनकर

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 18

थकान जरूरी है समुद्रों को
वरना तट छोड़ कर पहाड़ों पर चढ़ जाते
थकान जरूरी है पापियों के लिए
नहीं तो रात को भी वे निगल जाते
थकान जरूरी है सभी दुष्टों को
वरना और अधिक तेजी से
छीन ले जाते हक दूसरों का
थकान जरूरी है चिड़ियों को
लौट कर आने के लिए घोसलों में
थकान जरूरी है कामगारों को
अपना शरीर बचाने के लिए
जरूरी है थकान इन विध्वंसक हथियारों को
वरना दुगुनी तेजी से करते संहार
निरपराध जीव जंतुओं का
फिर क्या अकेले पितामह उन्हें रोक पाते?

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 19

चांद पर कोई भरोसा नहीं मुझे!
कभी लगता है यह पूरा
कभी हो जाता है अधूरा
उससे अधिक
भरोसा है मुझे हवाओं पर
उससे अधिक
सच्चे आदमी की जुबान पर
और उससे भी अधिक
पितामह के मौन पर।
मालूम है मुझे
यह मौन ही सब कुछ देता है
जैसे एक छोटे बच्चे को
पिता अपनी सारी खुशियां।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 20

मैंने सपने में देखा
जंगल के सारे जानवर
घुस आए हैं शहर में
ढूंढ रहे हैं वे हत्यारों को
ढूंढ रहे हैं वे मारक शस्त्रों को,
जो निमित्त बने
उनके भाई-बंधुओं की हत्या के।
वे सूंघ रहे हैं, खोज रहे हैं
वहशी तन और राक्षसी आंखों को,
उनका वेग बढ़ रहा है हर पल
जिनमें है गति बांध के टूट जाने की

उनके पांव बन गए हैं
बबूल के घने कांटे
और दांत हैं बाहर
जैसे कोई क्रोधित कटार।

उन्हें न्याय चाहिए
और इकट्ठे कर लिए हैं
उन्होंने सारे सबूत, गवाह और हथियार
रख दिया है सब कुछ
पितामह रूपी न्यायाधीश की मेज पर
जिन्हें करना है अब न्याय!

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 21

कोई बिना अगाध प्रेम के कैसे समझेगा
उन फूलों की कीमत
जो तुम्हारी पूजा में चढ़ाए जाते हैं

कोई कैसे समझेगा
उन गीतों के भाव
जो तेरी आराधना में गाये जाते हैं

कोई कैसे समझेगा उस प्रार्थना को
जिससे मिली खुशी
पक्षियों के उड़ान भरने जैसी होती है

कोई कैसे समझेगा उस धैर्य को
जिससे हमारी परीक्षा होती
न ही उस साधना को
जिससे तेरी दिव्य श्रेष्ठता को पाया जाता है

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 22

मैं एक पेड़ लगाता हूं और हासिल करता हूं असंख्य बीज।
ईश्वर ने भी किया होगा कुछ ऐसा ही,
धरती बोई होगी और फूट पड़े होंगे इनसे असंख्य रूप।
इसका ही कोई रूप है,
हमारा प्यारा अग्रसेन।
परम परमात्मा का कोई विशेष बीज अनश्वर!
उसी बीज से जन्मे हम अग्रवाल।
-हैं हम असंख्य संतानें उनकी प्यारी,
इसलिए मिलजुल कर रहना है,
कभी न काटे कोई डाल एक दूसरे की,
न ही हो ईर्ष्या हम पर कभी भारी।

❖❖❖

भगवान अग्रसेन जी

सुबह की प्रार्थना 23

घोड़ा टाप से गति का,
हाथी भार से शक्ति का,
और पक्षी उड़ान से,
देता है परिचय अपनी आजादी का।

सभी के कर्म ही
परिचायक हैं उनके गुणों के,
चाहे नमक हो या चीनी,
घुलने के बाद किसी द्रव में
पहचान अपनी पाते।

उसी तरह जिसने भी
तेरे अविनाशी प्रेम को
कर लिया आत्मसात
जोड़ लिया अपनी आत्मा से,
झूम उठा खुशियों से।

जो जागता है सबसे पहले
सुबह की हरियाली उसी की है।
वैसे ही याद किया प्रथम जिसने पितामह को,
श्रद्धा पूर्वक अपनी प्रार्थना से
दिव्य रोशनी वहीं चली आई।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 24

मैं इस संसार से बेहद डरा हुआ हूं
यह सीधे मस्तिष्क पर आक्रमण करता है
ऐसे जख्म देता है जिससे खून नहीं रिसता
केवल तनाव ही तनाव उपजता है
इस व्यथा से मेरी याद्दाश्त
भूतकाल में हजारों वर्ष पीछे छिप गयी है
मेरे वर्तमान ने भविष्य की ओर बढ़ना छोड़ दिया है
अब मैं एक मात्र बुत हूं
जो हर वक्त तुम्हारी प्रार्थना में लीन
कृपया मुझे अभयदान दो मेरे प्रभु!

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 25

अज्ञानी हैं वे जो
गर्वित हैं अग्र नाम का मुकुट पहने बरसों से
लेकिन भूल चुके हैं तुम्हारे नाम की महिमा ही,
जो भूल चुके हैं कि वह पितामह 5000 वर्ष दूर नहीं
बल्कि बिल्कुल पास है उनके।

अज्ञानी हैं वे
जो भूल चुके हैं तुम्हारे दिव्य दीपक को
जिसके सिद्धांतों की आंच में
सेंक रहे हैं वे अपनी रोटी हर दिन।

हे पितामह मुझे अनुगृहीत करो
प्रवेश करो उनके हृदय में
मेरे शब्दों के माध्यम से,
आंखें खोलो उनकी,
स्वीकार करो मेरा यह सविनय निवेदन,
आज।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 26

असंख्य रूप होते हैं लोगों के जीवन से मरण तक के,
उनमें से कोई एक विशेष रूप ही,
हो जाता है सभी का प्यारा।
वैसा ही एक रूप,
सर्वदा सुलभ, सर्वत्र विद्यमान,
है हमारे पूज्य पितामह का।
-सुसज्जित है जो सफेद केशों से,
लिए हुए मुख पर चांदी की आभा,
चमकता है जो धरती पर चांद-सूरज सा;
नाज है हमें इस पर,
है अग्रवालों का अधिकार जिस पर पूरा।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 27

मुझे गतिशील करो प्रभु
थका हुआ है मेरा शरीर
यह आलसी अजगर बन बैठा है
इसमें पत्तों जैसी न कोई हलचल है
ना ही धमक कांसे के बर्तन जैसी
यह वैसे ही सोया है
जैसे बिन बारिश के बादल
शिथिल है यह इतना
महसूस नहीं कर पाता
दर्द की पीड़ा भी
ना ही व्यथित होता है
किसी आलोचना से
यह बन चुका है
आलस से भरी एक तिजोरी
अब क्या करूं मैं?
प्रभु तुम ही खाली करो इसे

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 28

असंख्य राजा हुए धरती पर
सभी के महल गिरे
चकनाचूर हुए
मिट गए उनके नामोनिशान

धरती भुला देती है इसी तरह
प्रत्येक अनुपयोगी को
लेकिन बचा कर रखती है
एक नगीना जैसे अग्रसेन

जो समझता है इस बात को
सीख लेता है बहुत कुछ
जमा लेता है जड़ें वहीं
जहाँ होते हैं उनके पाँव

ईश्वर ने दिया है यह तोहफा शानदार
हम सभी अग्रवालों को
जहाँ पितामह, वहीं महालक्ष्मी
जहाँ प्रार्थना, वहीं सफलता है सब की

❖❖❖

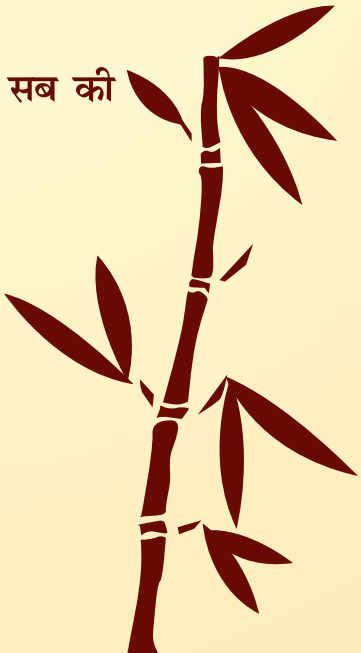

सुबह की प्रार्थना 29

जीवन से रात्रि का हिस्सा अगर हम निकाल दें
तो जीते हैं केवल हम आधी जिंदगी
यदि इसमें से भी निकाल दें
दिनचर्या और थकान भरी बकवास का समय
तो जीते हैं हम चौथाई जिंदगी
अब बचा-खुचा समय भी निकाल दे
परिवार और समाज के लिए
तो बच जाती है सुई जैसी जिंदगी
अब इस सुई जैसी जिंदगी को
हम बो दें बीज की तरह
पितामह के चरणों में
तो यह असीम कृपा वाला
एक वृक्ष बन जाएगा।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 30

इस मन के कचरे को कहां फेंकूं
यह कोयले की भांति मेरे भीतर जल रहा है
अपने काले धुएं और दुर्गंध से परास्त कर रहा
यह मुझे कभी चुपचाप बैठने नहीं देता
सताता है हर पल
अपने कीट और मच्छरों से
करने भी नहीं देता ठीक से प्रार्थना तुम्हारी
न ही चढ़ाने देता है फूलों की माला
प्रभु तुम ही दिखाओ कोई मार्ग
बताओ किस जगह इसे छोड़ आऊँ

❖❖❖

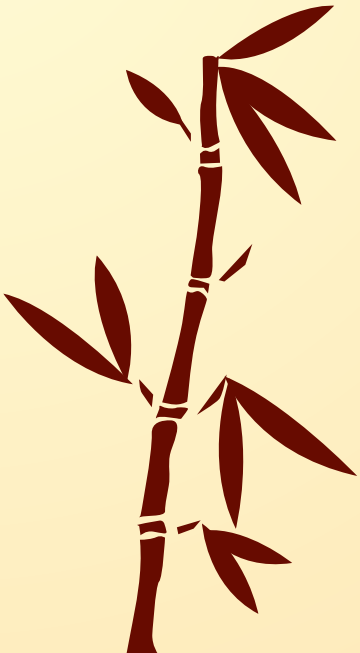

सुबह की प्रार्थना 31

तूफान, सूखा, बाढ़, भूकंप, ज्वालामुखी
आते हैं कितने ही बार
लेकिन पृथ्वी कहां हारती है
फिर से ढाल लेती है
अपने आप को नवीन स्वरूप में
फिर मैं क्यों थक जाता हूं
माचिस की एक तीली भी
कर देती है मुझे राख
किसी एक दुष्ट का हल्का सा स्पर्श भी
कर देता है मुझे चकनाचूर
तुम सोचते होगे मैं कितना कमजोर हूं
हां मैं बहुत कमजोर हूं
क्या फिर भी तुम थामोगे हाथ मेरा?

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 32

जिस छाते पर अंकित हो
दिव्य नाम तुम्हारा
फिर वह कैसे मामूली हो सकता
बन जाता है यह अग्र छत्र सा
जब बच्चों तक अग्र बंधुओं
के माध्यम से जाता

अब हर पल घुमड़ते बादल भी
नहीं भिगो पायेंगे इनको
न ही धूप रोक सकेगी राह
पहुंचेंगे समय पर पाठशाला
दोहरायेंगे अपना सारा पाठ

पढ़ लिख कर चाहे ये जो बनें
नहीं भुला पाएंगे
अग्र बंधुओं का नाम
स्नेह हमेशा उनका याद रहेगा
चाहे रहें कितनी भी दूर
या समुद्र के पार

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 33

कितने दिनों तक
पहनूंगा मैं पराया चश्मा
मुझे मेरी आंखें दो प्रभु
गणना करने दो मुझे निज ही
अपने पाप और पुण्य की
क्यों लूं अब मैं हिसाब
अपने कृत्यों का दूसरों से
मुझे मेरी आंखें दो
देखने दो सब कुछ स्वयं ही
उतारो मुझ कल्पना लोक से
रख दो धरातल पर
इतनी कृपा करो है प्रभु

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 34

कई बार अग्रवालों का वेग देखकर
धरती सोचती कहीं दिन तो नहीं इनके बड़े
और रातें छोटी

कहीं कोई भूल तो नहीं हो रही
बांटने में इनको घड़ी
कैसे वे आगे बढ़ते जा रहे हैं
बाकी पीछे छूट रहे
आंखें जिधर ले जाओ तो
वे ही दिखते पर्वत से भारी
फिर बाकी कैसे बौने हैं?
कहीं भूल तो नहीं हो गई मुझसे
इस चिंता में है धरती की छाती भारी

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 35

प्रभु तेरे निकट जाने से पाता हूं
फूलों जैसा सौंदर्य
इंद्रधनुष जैसा आनंद लोक
सुदामा के पांव धोने जैसा सुख
और मुक्तिधाम से गूंज रहे
भजनों का संगीत

जब तुझसे दूर जाता हूं
ना ही सुन पाता हूं
तेरे सागर की गर्जना
ना ही देख पाता हूं
तेरी पहाड़ जैसी ऊंचाई
ना ही चांद और सूरज
का उगना और डूबना

दुनिया की सारी क्रियाओं में
तुम अवस्थित हो,
हो सभी के लिए मार्गदर्शी
और साथ ही पितामह भी

लेकिन ये वृद्धजन इतने कमजोर हैं
पूरा लाभ नहीं उठा पाते तुम्हारी गति का
ठहर जाते हैं हर बार इनके पाँव थकान से

प्रभु रुको, थोड़ा धीरे चलो
दो इन्हें भी साथ चलने का मौका
सुनो प्रार्थना इनकी भी!

❖❖❖

भगवान अग्रसेन जी

सुबह की प्रार्थना 36

मेरी जटिलताओं को
तू चुटकी में हल कर सकता है
लेकिन तू ऐसा करता नहीं
मुझे बना दिया है तूने
अपनी एक कठपुतली
लेकिन खासियत दी है
मैं कभी थकता नहीं
मैं हमेशा यौवन से भरा
काम करता हूं मधुमक्खियों की तरह
नाटक करता हूँ
तेरे रंगमंच के लिए
हर काम मेरा नया होता है
नई तरह से अभिनय करने वाला
सचमुच जादूगर है तू
हर पुराने समय को लुप्त कर देता है
छुपा देता है उसे
जैसे-जैसे आगे बढ़ता हूँ मैं

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 37

आंधी तूफान बारिश
हर दिन आते मेरी आंखों के सामने
कुछ देर ठहरते फिर लुप्त हो जाते
कम होती आंखों की धुंधलाहट
और स्पष्ट देखने लगता हूं तुम्हें
हर बार होती है सामने
तेरी नवीन छवि
पहले से अधिक सुंदर
नित नये श्रृंगार से तू सजा
तेरे रूप में असंख्य लोक मिश्रित
मेरे जैसे असंख्य लोग
झुके हुए तेरे चरणों में
अनंत को तू बांट रहा भीख
किसी की नहीं झोली खाली

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 38

कहां ढूंढ़े तुम्हें?
तुम तो हो ध्वनि-हीन
बिल्कुल शांत
काम अपना करते हो
पेड़ की जड़ों की तरह
बेहद चुपचाप
मैं मूर्ख तलाशता हूं तुम्हें
हर उस जगह
जहां तुम हो सकते मौजूद
लेकिन तुम कहीं भी नहीं
बस भरोसा है मन में एक दृढ़
मिलोगे जिस दिन
दोगे मुझे एक छोटी सी दिव्य लालटेन
चेहरा भी दिखलाई देगा
इसके प्रकाश में तुम्हारा जरूर

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 39

जब बैठता हूँ तुम्हारी प्रार्थना के लिए
इस धरती पर
फिर मुझे होश कहां
स्वयं को भी मालूम नहीं
कैसे रखता हूँ पांव हवाओं पर
कैसे इन किरणों की हथेली पर
तो कभी जादुई बादलों पर
तो कभी आकाश के नीले बदन पर
फिर ऐसे अनगिनत तारों पर
जिनका नाम तक नहीं जानते
इस धरती के लोग
फिर तेरे पास होता हूं
बिल्कुल पास
तय कर लेता हूँ
इस करोड़ों मील की यात्रा को
पल भर में
पीते-पीते प्रेम के आँसू
होता भी नहीं विश्वास
कि मिलता हूं मैं तुमसे
इसी तरह से हर दिन

सुबह की प्रार्थना 40

मुश्किलें हमेशा हमला करती हैं
मधुमक्खियों की तरह
एक के बाद एक
मुझ निर्बल पर
काट देती हैं मेरी सारी पतंगें
चकनाचूर कर देती हैं मेरे सारे गर्व के पत्थर
मेरा सहारा बनी दीवार भी चरमरा जाती है
तब कराहता, तड़पता आशा भरी निगाहों से
देखता हूं तेरी ओर
कोशिश करके स्वयं में
भरता हूँ आत्मविश्वास
सोचता हूँ सचमुच तू ही एक मात्र
दुनिया का सबसे बड़ा कारीगर
जोड़ सकता है जो मेरे सारे टूटे सपनों को
और जबर्दस्ती खींच लेता हूँ तेरा हाथ
पोंछ डालता हूँ इससे अपने आंसू
यह कोई अपराध तो नहीं प्रभु ?

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 41

हर दिन तेरे चरणों में आता है
कोई न कोई नया सेवक
थका-हारा इस दुनिया की मार से
लाचार और बेबस
लेकिन लालसा नहीं कुछ पाने की
बस करना चाहता है
सेवा और परोपकार
इच्छा मात्र एक है-
स्वप्न में भी बांटते रहना
एक ईंट और एक रुपया
टूटने नहीं देना इस क्रम को
चाहे क्यों न बीत जाएँ
हजारों-लाखों साल

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 42

प्रभु जब तुम खुश होते हो
तुम्हारा प्रेम
सावन की घटा की तरह
बँट जाता है चारों ओर
हर किसी को कराते हो रसपान
सभी के मुंह में जाता है
तेरी अनुकम्पा का मधुर स्वाद
भर जाते हैं सभी के घर
धन और अनाज से
हरे भरे हो जाते हैं
खेत खलिहान
नाच पड़ते हैं मोर
दौड़ पड़ते हैं बैल
किसान थाम लेते हैं हल
सभी को बख्शते हो
उसी की जरूरत के रंग से
कोई अधूरा नहीं
प्रकृति में बस जाता है
सर्वत्र तुम्हारी चेतना का आनन्द

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 43

हर किसी को कैद करने के लिए
दीवारें होती हैं
जाल होते हैं
हथियारों की चमक
होशियारी रुतबे की
ताकत राक्षस जैसे समूह की-
इन सभी को फांदकर
निकल जाती है
वो होती है मेरी प्रार्थना

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 44

मैं बेहद स्वार्थी हूं
तुम्हारी थोड़ी सी सेवा करके
अत्यधिक लाभ वापस चाहता हूं
सावधान हूं मैं सबों से कुछ लेने के लिए
देने के लिए अंधेरे जैसा आलसी
अगर देना भी पड़ा तो होते हैं मेरे पास
परेशानियों के बीज और कंकड़

मैं क्या सेवा करूंगा?
जिसकी सुई ही हो गयी है बेईमान
फिर वो कैसे सिलने पाएगी फटे कपड़े
सामने से हूँ मैं बिल्कुल सफेद झाग सा
पीछे से कोई कुदृष्टि वाला हंता

इस काले स्वरूप को अंधा कर दो प्रभु
गला दो इसे अपने ताप की भट्टी में
फिर से नया कर दो
दो मुझे बिल्कुल स्वच्छ दृष्टि
ताकि बैठूं जब भी तुम्हारी प्रार्थना में
हो मेरे पास दूसरों जैसी निर्मल काया!

❖❖❖

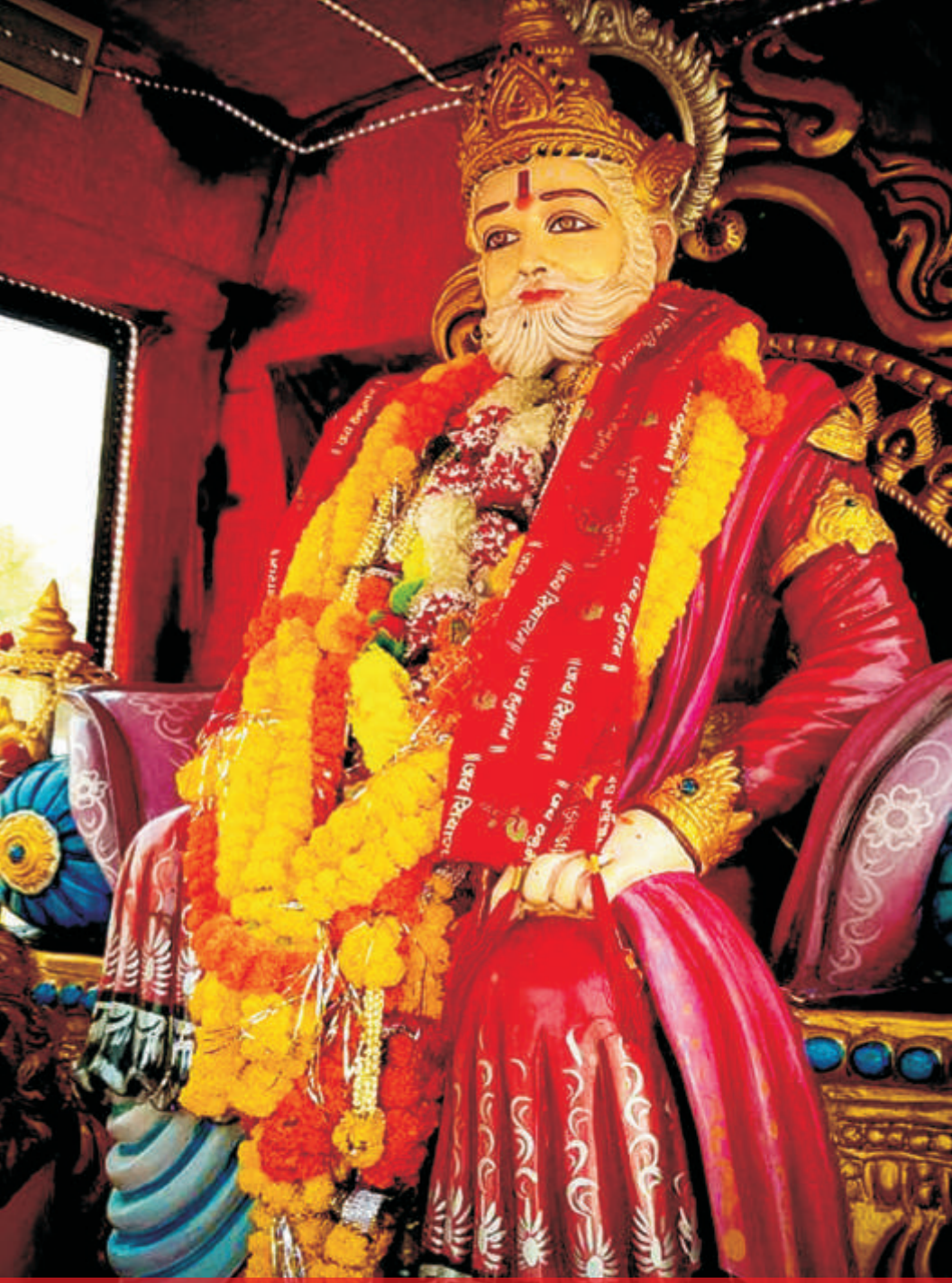

भगवान अग्रसेन जी

सुबह की प्रार्थना 45

समाज नहीं हो सकता कभी पक्का चबूतरा
ढहेगी ही इसकी ईंटें बार-बार
कभी इस में भीड़ होगी तो कभी खालीपन
कभी विवाद तो कभी प्यार
जरूरत होगी बार-बार
इस के खालीपन को भरने की
कभी मदद से तो कभी प्यार से
बांधे रखना होगा हमेशा
इसकी हर एक कमजोर डाल को
दूसरी मजबूत डाल से
ताकि मिलता रहे उसे सहारा
जो बड़े हैं वे तो पनप चुके
छोटे भी पनपेंगे इस तरह
यही है पितामह का अचूक सिद्धांत
एक ईंट और एक रुपया

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 46

जब मेरे सारे बोए बीज मर जाते हैं
कोई भी उभरकर नहीं आता
तब मेरे मन का सन्नाटा
जंगल के अंधेरे सा हो जाता है
और कंठ सूखकर
रेगिस्तान की कड़ी धूप
इस घोर मुसीबत के वक्त
मैं किस से सहारा लूं
सभी की पीठ अपने ही बोझ से भारी
हार कर मैं रखता हूं
तुम्हारे सामने
अपने सारे टूटे-फूटे बीज
और प्रार्थना के बदले
दया की भीख मांगता हूं

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 47

तेरे पास असंख्य खजाने हैं
और असंख्य हैं देने वाले हाथ
कोई खाली हाथ नहीं जाता
तेरे जैसे दानवीर के द्वार से
लोग मांगते हैं
और तू मांगें पूरी करता है
कभी इनकार नहीं करता
इसलिए तू अमर है
कभी मर नहीं सकता
हम अग्र भी सीख लेते हैं
इस से छोटा सा पाठ
और देकर मदद थोड़ी सी
पा लेते हैं लघु अमरता का
पितामह से वरदान

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 48

कीचड़ के ढेर में गिरकर
सुंदर फूल भी कीचड़ हो जाता है
व्यर्थ हो जाती है सूरज की किरणें
आलसी के शरीर पर गिर कर
कोई उपयुक्त पात्र ही संभाल पाता है
अमृत की महत्ता को

पितामह के नियम बिल्कुल साफ हैं
एक सुलझी हुई न्याय प्रणाली
सिद्धांत समाजवाद के उसूलों के
सम्भाल सकती है जिसे
केवल अग्रवालों की बुद्धि ही

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 49

मेरे पास तेरा कोई स्वरूप नहीं होता
सिर्फ एक चित्र के सहारे ही
ढूंढ़ना होता है तुझे सारे जगत् में
और तू ऐसा बहुरूपिया है
धर लेता है इस चित्र का ही रूप
और मुझे दर्शन देता है इसी तरह से
जैसे संसार के हर कण ने
धर लिया हो तेरा यही रूप
सभी जीवंत और सजीव
सभी सुनते हैं मेरी प्रार्थना
हर किसी के पास दिव्य कर्ण
और ढेर सारा प्रेम

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 50

बचपन से प्रौढ़ होने तक
अनगिनत रूपों में देखा है तुम्हें
कभी मेरी गलती पर हंसते हुए
कभी क्षमा करते हुए
कभी दंड देते हुए
कभी मेरी सफलता पर प्रोत्साहित करते हुए
कभी हारने पर सहारा देते हुए
दुनिया के हर रंग को
उड़ाया है तूने मुझ पर
निर्धन, धनवान, कमजोर और बलवान
सभी से परिचय करवाया है मेरा
मुझे बवंडर की तरह भी नचाया है
जिंदगी की मुश्किलें सामने रखकर
तपाया है मुझे हर एक आंच में
फिर सजाया है
सबसे अच्छे फूल की तरह
तेरे इन असंख्य उपकारों को
कैसे भूल जाऊं मैं
अभी तो हर दिन तेरी लीला जारी है
मृत्यु के सिर पर कदम रखने तक

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 51

मेरा संसार मेरे शरीर के इर्द-गिर्द
इसे ही मैं खींचता रहता हूं हर दिन
इसी के जतन में खोया रहता हूं
खूब साफ-सुथरा रखता हूं
हर बीमारी से दूर रखता हूं
इसमें ढेर सारा प्रेम भरता हूं
इसके हृदय को मजबूत करता हूं
कोशिश करता हूं
हमेशा इसमें नए नए पत्ते आएं
कोशिश करता हूं इसमें
अहंकार नहीं नम्रता भरी रहे
यह सबों से अच्छा रहे
सभी के बीच अनोखा हो
लेकिन बैठता हूं
जब तुम्हारी प्रार्थना में
भूल जाता हूं
इस शरीर का होना भी

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 52

मन थक जाता है जल्दी-जल्दी
अच्छा होता इसे सोचने का
कोई काम ही नहीं मिला होता।

इस वक्त मेरे मन में
इतने सारे सवाल घुस आए हैं
जैसे सारे चूहे भाग कर आ गए हों
बाढ़ के डर से मेरे शरीर में।

एक चींटी को रहने तक की
भी जगह नहीं बची है मुझ में
सिर से लेकर पांव तक
डूबा हुआ हूं चिंताओं के पानी में।

सिर्फ एक हाथ निकाल पाता हूं बाहर
और उसी से करता हूं तुम्हारी प्रार्थना-
इस मानसिक क्रूरता को दूर करने की।

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 53

अभी सारे जीव जंतु सोये हैं
सारी घड़ियां एक एक पलक झपकती
बढ़ रहीं हैं आगे
लेकिन मुझ में है ललक
बस केवल तुम्हारी एक झलक पाने की

देखो मेरे इन हाथों को
मैंने तोड़े हैं
दुनिया के सबसे सुन्दर फूल
गूंथ ली है इनसे अनेक मालाएं प्यार भरी
मीठे फल भी तोड़ लिए हैं ढेर सारे
प्रसाद के लिए तुम्हारे
और पवित्र गंगा जल से
भर लिया है पात्र एक सुंदर सा
साथ ही सजा ली है थाल पूजा की

अब जैसे ही पहली चिड़ियां चहकेगी
सूरज की आभा दीखेगी हल्की सी
अस्त हो रहा होगा चन्द्रमा
अंतिम मुस्कान देकर नभ में
तितलियां बस उड़ने वाली ही होगी
शोर शुरू होने वाला होगा जगत् में
उसी समय यह सारी सामग्री पूजा की
मैं कर दूंगा न्योछावर तुम्हारे चरणों में

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 54

मैंने कभी एक अमरूद नहीं तोड़ा
जब भी तोड़े गुच्छों में
मैं सिर्फ एक खा सकता हूं
इसलिए बाकी को बांट दिया दूसरों में

मैंने कभी अकेली कोई चीज नहीं थामी
ना ही दौड़ लगाई सिर्फ एक के पीछे
मेरा स्वभाव ही है ढेर सारा इकट्ठा करना
और बांट देना उसे लोगों में।

मेरा स्वभाव कितना अच्छा है!
गर्व करता हूं मैं इस पर
इसलिए मांगता हूं जब भी मैं तुमसे
तुम कभी मना नहीं करते
देते हो झोली भरकर
जानते हो यह सब के लिए है
मेरे लिए सिर्फ एक है!

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 55

पितामह आपने
मुझे एक छोटी सी कलम दी है
अब इससे क्या लिखूं
मेरी कल्पना तो सीमित है
केवल इस धरती तक
और तुम तो स्वामी पूरे जगत के
फिर विस्तार कैसे दूं
इससे तुम्हारे लोक तक।

एक समुद्र पार करता हूं
यह वहीं समाप्त हो जाता है
समाप्त हो जाते हैं सारे भू-भाग
और एक छोटा सा अंश ही
वर्णित हो पाता है
इन आंखों के भ्रमण से।

अभी मैं खड़ा हूं पृथ्वी की
सबसे ऊंचाई पर
या कहो एक छोटे से सेव पर
इससे तुम्हारे कद को कैसे छूऊं
जो अदृश्य है चारों ओर से
ढका हुआ रंग बिरंगी रोशनी से
और आंखें चौंधिया जाती है
थोड़ी सी भी दृष्टि तुम्हारी ओर करूं तो!

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 56

मुझे दुख है कि तूने
चरवाहा नहीं बनाया मुझे गायों का
कि हांकते हांकते उन्हें
कर लेता स्वर्ग के दर्शन

मुझे तूने घोड़ा भी नहीं बनाया
कम से कम जान तो लेता
क्या होता है वेग पैरों का
और क्रूरता मालिक की

मुझे तो तूने
गरीब भी नहीं बनाया
इसलिए जान न सका
कैसे जलती है दुख से झोपड़ी
और कैसे रोता है पेट
भूख से आधी रात में!

मुझे तूने चींटी भी नहीं बनाया
इसलिए जान न सका
संगठन का बल
ना ही बनाया मधुमक्खी
इसलिए सीख न सका समर्पण
रानी मक्खी के लिए

मुझे तो तूने अपना सेवक भी नहीं बनाया
इसलिए अजनबी बना रहा
सेवा-धर्म से

बनाया सिर्फ एक पुजारी
और दिया काम बिल्कुल सरल-
प्रार्थना और गाना आरती!

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 57

कौन है यह मायावी जो
धरती का बोझ उठाता है
साथ ही सूरज
और असंख्य तारों का भी?

कौन है जो हलचल मचाता है
समुद्र की लहरों में
अपनी उंगली से नचाता है
मछली और दूसरे प्राणियों को भी?

कौन है वह जो फैला हुआ अनन्त तक
दिखलाता है सिर्फ एक कण
अपने शरीर का
हम पृथ्वी वासियों को?

कौन है वो जो सबों में
भरता है आंसू
कभी खुशी और कभी दुख के?

कौन है वो करता है
नए लोगों को हर दिन जीवित
देता है मृत्यु हो चुके पुराने को?

कौन है जिसके पास,
है प्रचुर सांसें
कभी खत्म ना होने वाली ऊर्जा
और ना ही कभी नष्ट होने वाली इच्छाशक्ति?

कौन है वह दिव्यपुरुष
जिसकी पुण्य छवि को
जान ना पाए हम अब तक
जो करता है शासन
अग्रजनों पर हर पल।

❖❖❖

भगवान अग्रसेन जी

सुबह की प्रार्थना 58

प्रभु तूने रख ली
ढेर सारी रोशनी अपने पास
और हमें बना दिया जुगनू जैसा।
इस जुगनू में भी भर दी
एक बड़ी सी इच्छा
वह है तुम्हें
हमेशा खोजते रहने की

फिर थमा दी एक छोटी सी लालटेन
अंधेरी रात के लिए
और दिया बड़ा सा सूर्य
दिन के लिए
लेकिन इसी बीच ढक लिया
अपने शरीर को नीले आसमान से

अब हमारे पास ना पंख हैं
ना उड़ने वाले पांव
और फासला हमारा और तुम्हारा
अनेक युगों के बीत जाने जितना

अब बचा क्या है
भटकते रहने के सिवा
और खोजते रहने के तुम्हें
अनेक जन्म-जन्मांतर तक

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 59

मैं संसार से बहुत दूर
फिर भी बेहद खुश
अपनी कुटिया में
छोटी सी है यह
लेकिन संतुष्टि से भरपूर
मालामाल है हीरे जवाहरात से
मालामाल मधु और अमृत से
कभी आकर देखो
कभी करो आतिथ्य स्वीकार
द्वार पर है इसके प्यार
दीवारों पर संतुष्टि
जमीन पर है तृप्ति
हां पूजा घर कोई नहीं
पर हृदय है विशाल
जिसमें चारों ओर
लगी है केवल तुम्हारी तस्वीरें

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 60

मुझे मत दो
कोई धन संपदा
बस दो प्रेम तुम्हारा भरपूर
हर पल उसी के आंसू छलकें
मृत हो जाएं
मेरी सारी व्यर्थ की इच्छाएं
चाहे रहूं घर पर
या प्रवास या काम पर
टपकता रहे प्रेम तुम्हारा
ओस की बूंद की तरह
मुझ पर हर पल
यह प्रेम बना रहे
इतना भरपूर
मुझे तो मिले ही
छलके वृद्धजन पर भी
इस कृपा की आस लिए
करता हूं आज प्रार्थना
अपनी सारी श्रद्धा
करता हूं तुम पर न्यौछावर

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 61

सुख का प्रवाह
रुक जाता है जब
धैर्य टूटता जाता है मन का
उखड़ने लगते हैं पाँव
पंख टूट जाते हैं
संसार लगने लगता है
छोटा और निराश
एक छोटा सा प्याला बनकर
सिमट जाता हूं
केवल मूक होकर
नृत्य देखता हूं
सफल लोगों का
एक ईर्ष्या भाव
जन्मने लगता है
मेरे नजदीक
हुनर सारे
व्यर्थ हो जाते हैं
जैसे आत्मविश्वास रूठा हुआ
होती है इस वक्त आवश्यकता
तुम्हारी अत्यधिक
फिर से जीवित करने के लिए
मेरे खोए रंग

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 62

रुक जाए जब मेरा वेग
पितामह मेरा साथ देना
ताकि कर सकूं पार
दुर्गम बहावों और
टेढ़े-मेढ़े रास्तों को
पार कर सकूं
हर दुर्लभ को
जैसे करती सूरज की किरणें
जैसे करती हैं हवाएं
हर सूक्ष्म तन को
गतिशील करो मुझे
दो इतनी ही तीव्रता
हवा बना रहा हूं केवल
कभी नहीं आंधियां
मुझे जगाए रखो हमेशा
जैसे बादल करते भ्रमण आकाश में
दो अपने चरणों में स्थान
जैसा मिलता है हर किसी को
माता-पिता और वृद्धजनों से

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 63

मैं तो एक प्याला चाय का
चाय जितनी इसमें समाये
उतनी ही मेरी इच्छाएं
संतुष्ट हूं मैं इतने पर भी
अगर सदैव यह भरा रहे
चाहे यह जैसा भी हो
छोटा या बड़ा
इसी से हो जाएगा
गुजारा मेरी जिंदगी का
यही मेरे लिए अमृत
यही मेरा भरोसा
यही मेरी हर उम्र का साथी
इसी में मेरी तृप्ति
और इसी में मेरी भक्ति
बस इतनी कृपा रहे
मुझ पर पितामह की
कोई ना इसे
जरूरत से अधिक भरे
कि यह बाहर छलके
ना ही छीने मुझसे कोई
यह रहे सदैव मेरा
जैसा है अभी वैसा ही

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 64

हजारों वर्ष पूर्व बताए थे
तुमने अपने अनेक बहुमूल्य सिद्धांत
कार्यान्वित करके भी दिखलाया था उनको
और दी थी आज्ञा पूरा करते रहने की
भविष्य में भी बार-बार

क्षमा करो नाथ
हम सब कुछ भूल गए
हो गए हैं कोरे कागज एक बार फिर से
फिर से हैं हम रेत के खंडहर
दिशाहीन भटक रहे हैं
जैसे हों कोई मूर्ख यात्री

इतना भी नहीं जानते हम
ईंट, ईंट के साथ जब रहती
बन जाते हैं बड़े-बड़े महल
रुपया, रुपया के साथ रहकर
कहलाता है अपार धन

कृपा करो हम पर
बनो शिक्षक पुनः एक बार
फिर से अवतरित हों धरती पर
जैसे पड़े थे तुम्हारे चरण
कभी धरती पर अमृत समान

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 65

प्रभु मेरी प्रार्थनाएं भी
एक पोशाक की तरह ही हैं
मैं लिखता हूं जिन्हें
अपने सबसे अच्छे प्रयास से
फिर पहनाने की कोशिश करता हूं
तुम्हें नए नए ढंग से

जितनी सारी मेरी प्रार्थनाएं हैं
उतने सारे तुम्हारे स्वरूप
उतनी सारी मेरी खुशियां
उतना ही अधिक मेरा आनंद
जो सागर की लहरों की तरह
बार-बार मुझे छूता है
याद दिलाता है
हर दिन तेरे चरण स्पर्श की

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 66

रेत की कोई पहचान नहीं
ना ही बादलों की कोई
ना ही लिखा होता है
उड़ती चिड़िया के पंखों पर कोई नाम
अनगिनत लोग ऐसे हैं
जिनकी पहचान मात्र भीड़ है
लेकिन अग्रवाल हैं इससे हटकर
सभी के अलग-अलग नाम
सभी के ऊंचे-ऊंचे काम
सभी की अलग-अलग पहचान
सभी पर कृपा पितामह की!

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 67

जब काम तुम्हारा पूरा हो जाए
थोड़ा आराम कर लेना
जीवन संग्राम में जो लगे हैं घाव
थोड़ा उन्हें सूखने छोड़ देना
पांव की थकान का भी उपचार करना
रखना शरीर को पेड़ की छाया में
वृक्षों में होती है इतनी शक्ति
भर देते हैं जीवन रत्ती-रत्ती
जब फिर से हो जाओ ताजा
हो जाओ वृक्ष की तरह हरे-भरे
खाना-पीना, प्रार्थना करना
और खड़े हो जाना
फिर से अग्र सेवकों की कतार में

❖❖❖

सुबह की प्रार्थना 68

योगी के साथ रहकर मैं योगी न बन सका
भोगी के साथ रहकर भोगी न बन सका
सभी से मन को हटा लिया
सोचता हूं आज कुछ भी नहीं बनना
लेकिन यात्री जरूर बनूंगा
शुरू करूंगा यात्रा तुम तक पहुंचने की
चाहे वह जमीन हो कितनी ही कठोर या पथरीली
सभी दर्रों और नदियों को पार कर जाऊंगा
बीहड़ जंगलों को भी
पकड़ कर तुम्हारे दिव्य प्रकाश की राह
पूरा कर लूंगा अपना सफर
और फिर तेरे चरणों के सामीप्य
लूंगा सांस अंतिम मोक्ष की
हे प्रभु मदद करना मेरी
इस दुर्गम यात्रा में

❖❖❖

सौजन्यः

''मरुधर के स्वर'' पत्रिका

जमशेदपुर

डॉ. नरेश अग्रवाल–प्रधान संपादक

Mob.: 933 48 25981

महेश अग्रवाल–संपादक

सधन्यवाद!